

ये अव्यक्त इशारे

सहनशीलता के देव वा देवी बनो

- 1) समय प्रमाण अब सहनशीलता के गुण को अपना निजी संस्कार बनाकर सहनशीलता के देव वा देवी बनो। जब कहते हो मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ, तो शान्त स्वरूप होकर रहना, सहनशील बनना -- इसे अपना संस्कार बना दो। इस टाइटल वा स्वमान की स्मृति से बड़ी बात को भी छोटा बना दो।
- 2) स्वयं को श्रेष्ठ बनाने के बीच में जो भी कोई विघ्न आये उसमें सहनशीलता की शक्ति से नम्बर आगे ले लो कोई कैसी भी आत्मा हो, गाली देने वाली भी हो, निन्दा करने वाली हो लेकिन अपनी शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा, वृत्ति द्वारा, स्थिति द्वारा ऐसी आत्मा को भी गुण दान या सहनशीलता की शक्ति का वरदान दो।
- 3) अगर कोई क्रोध अग्नि में जलता हुआ आपके सामने आये तो आग में तेल नहीं डालना, पानी डालना। अगर क्रोधी के आगे आपने मुख से क्रोध नहीं किया, मुख से शान्त रहे लेकिन आंखों द्वारा, चेहरे द्वारा क्रोध की भावना रखी तो भी तेल के छींटे डाले।
- 4) क्रोधी आत्मा परवश है उसे रहम के शीतल जल द्वारा वरदान दो। जिस समय आवश्यकता है उस समय सहनशक्ति को धारण करो। साक्षी बनने का अभ्यास हो तो भिन्न-भिन्न खेल देखने में मजा आयेगा। खेल का अर्थ ही है भिन्नता। अगर भिन्नता नहीं है तो खेल में मजा नहीं।
- 5) हर बात में अच्छा-अच्छा कहते अच्छा बनते जाओ क्योंकि हर बात में अच्छाई समाई हुई जरूर होती है। चाहे सारी बात बुरी हो लेकिन एक दो अच्छाई भी जरूर होती है। अगर कोई आवेश कर रहा है तो जितना वह आवेश करता उतना आपको धीरज सिखाता है, सहन रहना सिखाता है। इसलिए कहते हैं जो हो रहा है वह अच्छा और जो होना है वह और अच्छा। अच्छाई उठाने की सिर्फ बुद्धि चाहिए बस। बुराई को न देख अच्छाई उठा लो तो नम्बर आगे आ जायेगा।
- 6) बापदादा ने आप बच्चों को सर्व गुणों के वैरायटी सेट का श्रृंगार बाक्स दिया है। जिस समय जो श्रृंगार चाहिए उस समय वही सेट धारण कर सदा सजे-सजाये रहो। सहनशीलता का सेट पहनना है तो फुल सेट पहनो। कानों द्वारा भी सहनशीलता हो, हाथों द्वारा भी सहनशीलता का श्रृंगार हो।
- 7) सदा ध्यान रखो कि 'मुझे अपने को बदलना है', स्थान को वा दूसरे को नहीं बदलना है लेकिन अपने को बदलना है। इसके लिए सहनशीलता का अवतार बन अपने आपको एडजस्ट करो। किसी से भी किनारा नहीं करना है, छोड़ना नहीं है लेकिन स्वयं को बदलना है।
- 8) इस वर्ष हर बच्चे को सहनशीलता का देव वा देवी बनना है। संगठन में अगर कोई एक के लिए कुछ बोलता भी है तो दूसरा चुप रहे तो बोलने वाला कब तक बोलेगा। आखिर तो चुप ही हो जायेगा। सिर्फ उसमें 10 बारी सुनने की हिम्मत चाहिए। दो बारी में ही दिलशिकस्त नहीं हो जाओ। 10-12 बार तो सुनकर सहन करो।
- 9) सदा यह स्मृति रहे कि सहन करने की आज्ञा किसने दी है? कई बच्चे सहन करते हैं लेकिन मज़बूरी से सहन करना और मोहब्बत में सहन करना, इसमें अन्तर है। बात के कारण सहन नहीं करते हो लेकिन बाप की आज्ञा है सहनशील बनो। तो परमात्मा की आज्ञा मानना ये खुशी की बात है, ना कि मज़बूरी है।
- 10) आजकल कॉमन रूप में बोल देते हैं - क्या मुझे ही मरना पड़ेगा, मुझे ही सब सहन करना पड़ेगा... लेकिन यह मरना नहीं है अधिकार पाना है। इसलिए मरना शब्द खत्म कर दो। ऐसे-ऐसे बोल नहीं बोलो। शुद्ध भाषा बोलो।
- 11) ब्रह्मा बाप जो इतनी बड़ी फ्रस्ट अथॉरिटी है उसने भी छोटे-छोटे बच्चों से, अज्ञानियों से भी सुना,

- इनसल्ट सहन की। ब्रह्मा बाप की भी इनसल्ट करते थे तो आप कौन हो! जब बाप ने सब कुछ सहन कर परिवर्तन किया तो फालो फादर करो। सिर्फ हिम्मत की बात है, सब सहज हो जायेगा।
- 12) अब ऐसा ग्रुप सामने आये जो संकल्प ले कि सहन करेंगे, त्याग करेंगे, बुरा-भला सुनेंगे, परीक्षाओं को पास करेंगे लेकिन लक्ष्य को प्राप्त करके ही छोड़ेंगे। निंदा-स्तुति, मान-अपमान सभी को पार करने वाला ग्रुप चाहिए तब उनको और भी फॉलो करेंगे।
- 13) क्रोध अग्नि के रूप में ईश्वरीय सम्पत्ति को जला रहा है, जोश के रूप में बेहोश कर रहा है, इसे सहनशक्ति में परिवर्तित कर रूहानी जोश वा रूहानी खुमारी में रहो तो यह बेहोश को होश दिलाने वाला एक शस्त्र बन जायेगा।
- 14) सरलचित जरूर बनो लेकिन जितना सरलचित उतना ही सहनशील भी बनो। सरलता के साथ समाने की, सहन करने की शक्ति भी जरूर चाहिए। अगर समाने और सहन करने की शक्ति नहीं तो सरलता बहुत भोला रूप धारण कर लेती है और कहाँ-कहाँ भोलापन बहुत भारी नुकसान कर देता है।
- 15) कोई ने कुछ ईशारा दिया तो उस ईशारे को वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए उन्नति का साधन समझ करके उस ईशारे को समा देना वा अपने में सहन करने की शक्ति भरना यह अभ्यास होना चाहिए। सूक्ष्म में भी वृत्ति वा दृष्टि में हलचल तब आती है जब अन्दर अभिमान होता है।
- 16) जैसे साकार रूप में देखा - जितना ही नॉलेजफुल उतना ही सरल स्वभाव, जिसको कहते हैं बचपन के संस्कार। बुजुर्ग का बुजुर्ग, बचपन का बचपन। तो आप बच्चों की भी चलन ऐसी हो जिससे बाप और दादा का चित्र देखने में आये।
